आपकी जिज्ञासा

प्रिय पाठको, प्रायः एक ही प्रकार की जिज्ञासाओं के समाधान आप पत्र एवं फोन, फैक्स, ईमेल द्वारा पूछते रहते हैं अतः कुछ प्रमुख जिज्ञासा जो सबसे अधिक आ रही है उनके समाधान नीचे स्पष्ट किये जा रहे हैं। यदि आपकी भी कोई जिज्ञासा हो तो आप पत्रिका कार्यालय को पत्र लिखे एवं पत्र के ऊपर ''जिज्ञासा'' अवश्य लिखें। सभी समाधान स्वयं परमपूज्य गुरुदेव श्री कमल श्रीमालीजी द्वारा दिये जाते हैं।

जिज्ञासा- गुरुजी, रक्षाबंधन के दिन द्वार पर पवित्र धागा बांधना क्या सबके लिए अनिवार्य होता है।

समाधान- भारतीय परंपराओं के अनुसार इस दिन परिवार के पुरोहित लाल व केसरिया धागों को मंत्रोच्चार से पवित्र कर सदस्यों की कलाइयों तथा घर या भवन के मुख्य द्वार पर रक्षासूत्र के रूप में बांधते हैं। मंत्रों की शक्ति प्राप्त ये धागे ब्रह्माण्ड में व्याप्त दिव्यशक्ति के प्रति प्रेम व श्रद्धा का उद्घोष तो करते ही हैं, साथ ही मुसीबत के समय ईश्वरीय सहायता को भी आकर्षित करते हैं। वास्तुशास्त्र के अनुसार घर के मुख्य द्वार पर बंधा यह धागा आपके घर को दुर्भाग्य तथा हर प्रकार के प्रकोपों से बचाता है। शायद इसी वजह से इस त्यौंहार को हर बुराई से बचाने वाला पर्व भी कहा जाता है।

कहा जाता है कि घर के मुख्य द्वार पर बंधा यह धागा वहाँ निवास करने वाले हर सदस्य के पुरुषार्थ को जाग्रत कर धर्म का मार्ग प्रशस्त करता है। इसलिए धर्म व परंपराओं के अनुसार सबको यह कार्य करना अति आवश्यक है।

जिज्ञासा- भगवान कृष्ण के जन्म के संबंध में कुछ ज्योतिषीय कारण तथा उनके जन्म के मुहूर्त के बारे में बताएं?

समाधान- श्रीकृष्ण जन्म खंड में जन्माष्टमी मुहूर्त के संबंध में आया है कि रात्रि के सात मुहूर्त निकलने के पश्चात् आठवां उपस्थित हुआ जो दुर्ज्ञेय लग्न था, उस लग्न पर शुभ प्रभाव था। रोहिणी युक्त अष्टमी के संयोग से जयंति योग की सृष्टि में सूर्य आदि ग्रह अपनी गति क्रम लांघकर मीन लग्न में जा पहुंचे। कालक्रम से कथित सभी ग्रह ग्यारहवें स्थान में जाकर सानंद स्थित हो गये। इसी समय मेघ वर्षा करने लगे, ठंडी ठंडी हवा चलने लगी। पृथ्वी प्रसन्न थी। दसों दिशाएं स्वच्छ थी, अप्सरा, गंधर्व खुश थे, अग्निहोत्री भी आल्हादित थे। 'जन्माष्टमी व्रत' हेतु कहा गया है कि यदि आधी रात के वक्त अष्टमी तिथी का चौथाई अंश भी दृष्टिगोचर होता हो वही व्रत का मुख्य काल है। सप्तमी विद्धा अष्टम का यत्नपूर्वक त्याग होना चाहिये। रोहिणी युक्त सप्तमी विद्धा अष्टमी को त्याज्य बताया है। ज्ञातव्य है कि श्रीकृष्ण अविद्धतिथी एवं नक्षत्र में अवतीर्ण हुए थे। यदि सोमवार और बुधवार से युक्त जयंति मिल जाये तो यह पुण्यकाल होता है। उदयकाल में किंचित मात्र कुछ अष्टमी हो और संपूर्ण दिन रात में नवमी हो और बुधवार सोमवार व रोहिणी का योग हो तब व्रत का उत्तम काल बताया गया है।

जिज्ञासा- गुरुजी, योग में नाभी का इतना महत्व क्यों है?

समाधान- यह अग्नि स्थान है, इसे सूर्य का स्थान भी कहा गया है। यहाँ ऊष्मा पैदा होती है। नाभी के आस-पास का सारा स्थान ऊष्मा का ही स्थान है। हमारे शरीर में जो ऊष्मा पैदा होती है वो यहीं से होती है। जिन लोगों ने ग्रंथ पढ़-पढ़ कर नाभि पर ध्यान करना प्रारम्भ किया, उनमें ऊष्मा बहुत बढ़ गई। वासना इतनी तीव्र हो गई कि उसको संभाल पाना कठिन हो गया। यह केन्द्र हमारी ऊष्मा और तेजस्विता का केन्द्र है। जब नाभि का भाग निष्क्रिय हो जाता है तब शरीर में शिथिलता, मंदता आ जाती है।

जिज्ञासा-हिन्दू धर्म अनुसार तीर्थ तथा धाम में क्या अन्तर है?

समाधान-हिन्दू धर्म के अनुसार तीर्थ वह है जहां प्राकृतिक रूप में सदा जल के स्त्रोत बहते हों, जलवायु हो, जहां ज्ञान का अर्जन हुआ हो, अथवा अत्यधिक शुभ कार्य हुए हो ऐसी भूमि। इनके अतिरिक्त अन्य तीर्थ नहीं है। ये तीर्थ मानव से नहीं मिट सकते, ईश्वर की इच्छा के बिना समाप्त नहीं हो सकते। (तीर्थ मानव निर्मित नहीं होते। प्राकृतिक होते हैं।

जहाँ पवित्र प्राकृतिक भूमि थी, उस पर जहां तहां मंदिर निर्माण किये गये। ये मंदिर प्राकृतिक नहीं होने से तीर्थ नहीं है न इन्हें तीर्थ मानते हैं। इससे इन्हें धाम कहते हैं। धाम मात्र साधन होने से बनते बिगड़ते रहते हैं। इनमें पंच धाम प्रधान है। चार धाम भारत में है बद्री, जगन्नाथ, सेतुबंधरामेश्वर, द्वारिका। विष्णु महा मंदिर अंककोट वाट् (कंबोज)। दो विष्णु पद-गया, महाविष्णु मंदिर अंककोट वाट्। पांच जलाशय तीर्थ प्रधान हैं। पुष्करराज, बिन्दुसरोवर, पंपासर, नारायण सरोवर, मानसरोवर। प्रधान तीर्थ नदियें गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, नर्बदा, कावेरी, सरयू। दो महानद सिंधु, ब्रह्मपुत्र।

जिज्ञासा- आज के दौर में बढ़ती हुई आकस्मिक दुर्घटनाओं का घटना कुछ ग्रह योगों की विशेष स्थिति पर निर्भर करता है या नहीं। कृपया समाधान करें।

समाधान- आज के यांत्रिक युग के विकास के साथ-साथ आकस्मिक दुर्घटनाओं की संख्या में दिनोंदिन वृद्धि चिंताकारक है। समाचार पत्रों में नित्यप्रति इस प्रकार की दुर्घटनाओं के समाचार पढ़ने को मिलते रहते हैं। ज्योतिष की दृष्टि से इसके लिए निश्चित ही कुछ ग्रहस्थितियां उत्तरदायी होती है। किंतु ऐसे ग्रहयोग देखने से पूर्व, व्यक्तिगत जन्मकुण्डलियों में इस प्रकार की दुर्घटनाओं की संभावना पर विचार किया जाना अत्यावश्यक है।

इसके लिए सर्वप्रथम लग्न, लग्नाधिपति, चन्द्रमा तथा सूर्य की स्थिति का अध्ययन करना आवश्यक है। यदि यह चारों पापग्रहों से दृष्टियुक्त हों अथवा पापग्रहों के मध्य में हों तथा कोई शुभ संबंध नहीं बनता हो तभी दुर्घटना संभव है। इसके अतिरिक्त मंगल, शनि एवं राहु की स्थिति ही अनायास दुर्घटनाओं तथा एतत् कारणात् मृत्यु के संबंध में अधिक महत्त्वपूर्ण होती है।

जिज्ञासा- गुरुजी, वास्तु क्या है? वास्तु शिल्प है या शास्त्र?

समाधान- वास्तु शब्द का अर्थ है निवास करना। जिस भूमि पर मनुष्य निवास करते है, उसे वास्तु कहा जाता है। वास्तु में गृहनिर्माण सम्बन्धी कार्य में बहुत से नियमों का पालन किया जाता है। इन नियमों का पालन करने से मनुष्य को अन्य कई प्रकार के लाभ के साथ स्वास्थ्य का लाभ भी होता है। वास्तु वास्तव में शिल्प है लेकिन जब नियम बनते जाते हैं तब वह एक शास्त्र का रुप ले लेते हैं।

□□□